<u>भ्रमर गीत</u>

दशमस्कंध, अध्यायः ४७

गोप्युवाच

मधुप □ तवबन्धो मा स्पृशाङ्घ्रिं सपत्न्याः

□ चविलुलितमाला□ ङ्□ मश्मश्रुभिर्नः ।

वहतु मधुपतिस्तन्मानिनीनां प्रसादं

यदुसदसि विडम्ब्यं यस्य दूतस्त्वमीदृक् ॥१२॥

र□मधुप, तू □ पटी□ ा सखा है; इसलिए तू भी □ पटी है । तू हमारा□पैरों□ ो मत छू । झूठा□प्रणाम □ र□□हमस□अनुनय-विनय मत □ र । हम द□ख रही हैं □ श्री□ ष्ण□ ी जो वनमाला हमारी सौतों□□वक्षःस्थल□□स्पर्शस□मसली हुई है, उस□ ा पीला-पीला □ □ म त□री मूछोंपर भी लगा हुआ है । तू स्वयं भी तो □ सी □ सुमस□प्र□म नहीं □ रता, यहाँ-स□वहाँ उड़ा □ रता है । जैस□त□र□स्वामी, वैसा ही तू ! मधुपति श्री□ ष्ण मथुरा□ ी मानिनी नायि□ ाओं□ ो मनाया □ रें, उन□ ा वह □ □ मरूप □ पा-प्रसाद, जो यदुवंशियों□ ी सभामें उपहास □ रन□योग्य है, अपन□ही पास रखें । उस□त□र□द्वारा यहाँ भ□जन□□ क्या आवश्य□ ता है ? ॥१२॥

सकृदधरसुधां स्वां मोहिनीं पाययित्वा

सुमनस इ□ सद्यस्तत्यजेऽस्मान् भ□ादृक् ।

परिचरति कथं तत्पादपद्मं नु पद्मा

ह्यपि बत हृतचेता उत्तमश्लोकजल्पैः ॥१३॥

जैस□तू □ ाला है, वैस□ही व□भी हैं । तू भी पुष्पों□ ा रस ल□ र उड़ जाता है, वैस□ही व□भी नि□ ल□ उन्होंन□हमें □□वल ए□ बार- हाँ, ऐसा ही लगता है- □□वल ए□ बार अपनी तनि□ -सी मोहिनी और परम माद□ अधरसुधा पिलायी थी और फिर हम भोली-भाली गोपियों□ ो छोड़□ र व□यहाँस□चल□गाय□ पता नहीं; सु□ मारी लक्ष्मी उन□□चरण□ मलों□ ी स□वा □ै स□□ रती रहती हैं ! अवश्य ही व□छैल- छबील□श्री□ ष्ण□ ी चि□ नी- चुपड़ी बातोंमें आ गयी होंगी। चितचोरन□ उन□ ा भी चित्त चुरा लिया होगा ॥१३॥

किमिह बहु षडङ्घ्रे गायसि त्वं यदूना-

मधिपतिमगृहाणामग्रतो नः पुराणम् ।

□जयसखसखीनां गीयतां तत्प्रसंगः

क्षपितकुचरुजस्ते कल्पयन्तीष्टमिष्टाः ॥१४॥

अरे भ्रमर ! हम □न□ासिनी हैं । हमारे तो घर-द्वार भी नहीं हैं । तू हम□ोगोंके सामने यदु□ंशशिरोमणि श्रीकृष्णका बहुत-सा गुणगान क्यों कर रहा है ? यह सब भ□ा हम □ोगोंको मनानेके □िये ही तो ? परन्तु नहीं- नहीं, □े हमारे □िये कोई नये नहीं हैं । हमारे □िए तो जाने- पहचाने, बि□कु□ पुराने हैं । तेरी चाप□ूसी हमारे पास नहीं च□ेगी । तू जा, यहाँ से च□ा जा और जिनके साथ सदा □िजय रहती है, उन श्रीकृष्णकी मधुपुर□ासिनी सखियोंके सामने जाकर उनका गुणगान कर । □े नयी हैं, उनकी □ी□ाएँ कम जानती हैं और इस समय □े उनकी प्यारी है; उनके हृदयकी पीड़ा उन्होंने मिटा दी है । □े तेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगी, तेरी चाप□ूसीसे प्रसन्न होकर तुजे मुँहमाँगी □स्तु देंगी ॥१४॥

दि□ भु□ च रसायां काः स्त्रियस्तद्दुरापाः
कपटरुचिरहासभ्रू□िजृम्भस्य याः स्युः ।
चरणरज उपास्ते यस्य भूति□र्यं का
अपि च कृपणपक्षे ह्युत्तमश्लोकशब्दः ॥१५॥

भौरें! □े हमारे □िये छटपटा रहे हैं, ऐसा तू क्यों कहता है ? उनकी कपटभरी मनोहर मुसकान और भौहोंके इसारे से जो □शमें न हो जायँ, उनके पास दौड़ी न आ□ें- ऐसी कौन-सी स्त्रियाँ हैं ? अरे अनजान ! स्वर्गमें, पाता□में और पृथ्वीमें ऐसी एक भी स्त्री नहीं हैं । औरोंकी तो बात ही क्या, स्वयं □क्ष्मीजी भी उनके चरणरजकी से□ा किया करती हैं । फिर हम श्रीकृष्णके □िये किस गिनतीमें है ? परन्तु तू उनके पास जाकर कहना कि 'तुम्हारा' नाम तो 'उत्तम श्लोक' है, अच्छे-अच्छे □ोग तुम्हारी कीर्तिका गान करते हैं; परन्तु इसकी सार्थकता तो इसीमें है कि तुम दीनोंपर दया करो । नहीं तो श्रीकृष्ण ! तुम्हारा 'उत्तम श्लोक' नाम झूठा पड़ जाता है ॥१५॥

□िसृज शिरसि पादं □ेद्म्यहं चाटुकारै-
रनुनय□िदुषस्तेऽभ्येत्य दौत्यैर्मुकुन्दात् ।
स्वकृत इह □िसृष्टापत्यपत्यन्य□ोका
व्यसृजदकृतचेताः किं नु सन्धेयमस्मिन् ॥१६॥

अर्थ:- अरे मधुकर ! तू मेरे पैरपर सिर मत टेक । मैं जानती हूँ कि तू अनुनय-□िनय करनेमें, क्षमा-याचना करनेमें बड़ा निपुण है । मा□ूम होता है तू श्रीकृष्णसे ही यही सीखकर आया है कि रूठे हुए को मनानेके □िए दूतको-संदेश□ाहकको कितनी चाटुकारिता करनी चाहिए । परन्तु तू समझ □े कि यहाँ तेरी दा□ नहीं ग□नेकी । देख, हमने श्रीकृष्णके □िये ही अपने पति, पुत्र और दूसरें □ोगोंको छोड़ दिया । परन्तु उनमें तनिक भी कृतज्ञता नहीं । □े ऐसे निर्मोही निक□े कि हमें छोड़कर च□ते बने ! अब तू ही बता ऐसे अकृतज्ञके साथ क्या सन्धि करें ? क्या तू अब भी कहता है कि उन पर □िश्वास करना चाहिये ?॥१६॥

मृगयुरि□ कपीन्द्रं □िव्यधे □ुब्धधर्मा
स्त्रियमकृत □िरूपां स्त्रीजितः कामयानाम् ।
ब□िमपि ब□िमत्त्वा□ेष्टयद् ध्वाङ्क्ष□द् य-
स्तद□मसितसख्यैर्दुस्त्यजस्तत्कथार्थः ॥१७॥

ऐ रे मधुप ! जब □े राम बने थे, तब उन्होंने कपिराज बा□िको व्याधके समान छिपकर बड़ी निर्दयतासे मारा था। बेचारी शूर्पणखा काम□श उनके पास आयी थी, परन्तु उन्होंने अपनी स्त्रीके □श होकर उस बेचारीके नाक-कान काट □िये और इस प्रकार उसे कुरूप कर दिया । ब्राह्मणके घर □ामनके रूपमें जन्म □ेकर उन्होंने क्या किया ? ब□िने तो उनकी पूजा की, उनकी मुँहमाँगी □स्तु दी और उन्होंने उसकी पूजा ग्रहण करके भी उसे □रुणपाशसे बाँधकर पाता□में डा□ दिया। ठीक □ैसे ही, जैसे कौआ ब□ि खाकर भी ब□ि देने□ा□ेको अपने अन्य साथियोंके साथ मि□कर घेर □ेता है और परेशान करता है । अच्छा, तो अब जाने दे; हमें श्रीकृष्णासे क्या, किसी भी का□ी □स्तुके साथ मित्रतासे कोई प्रयोजन नहीं है। परन्तु यदि तू यह कहे कि 'जब ऐसा है तब तुम□ोग उनकी चर्चा क्यों करती हो ?' तो भ्रमर ! हम सच कहती हैं, एक बार जिसे उसका चसका □ग जाता है, □ह उसे छोड़ नहीं सकता। ऐसी दशामें हम चाहनेपर भी उनकी चर्चा छोड़ नहीं सकतीं ॥१७॥

यदनुचरित□ी□ाकर्णपीयूष□प्रुट्-
सकृददन□िधूतद्वन्द्वधर्मा □िनष्टाः ।
सपदि गृहकुटुम्बं दीनमुत्सृज्य दीना
बह□ इह □िहङ्गा भिक्षुचर्यां चरन्ति ॥१८॥

श्रीकृष्णकी □ी□ारूप कर्णामृतके एक कणका भी जो रसास्वादन कर □ेता है, उसके राग-द्वेष, सुख-दुःख आदि सारे द्वन्द्व छूट जाते हैं । यहाँतक कि बहुत-से □ोग तो अपनी दुःखमय दुःख से सनी हुई घर-गृहस्थी छोड़कर अकिञ्चन हो जाते हैं, अपने पास कुछ भी संग्रह-परिग्रह नहीं रखते और पक्षियोंकी तरह चुन-चुनकर भीख माँगकर अपना पेट भरते हैं, दीन-दुनियासे जाते रहते हैं । फिर भी श्रीकृष्णकी □ी□ाकथा छोड़ नहीं पाते । □ास्त□में उसका रस, उसका चसका ऐसा ही है । यही दशा हमारी हो रही हैं ॥१८॥

□यमृतमि□ जिह्मव्याहृतं श्रद्दधानाः
कु□िकरुतमि□ाज्ञाः कृष्ण□ध्वो हरिण्यः ।
ददृशुरसकृदेतत्तन्नखस्पर्शतीव्र
स्मररुज उपमन्त्रिन् भण्यतामन्य□ार्ता ॥१९॥

जैसे कृष्णसार मृगकी पत्नी भो□ी-भा□ी हरिनियाँ व्याधके सुमधुर गानका □िश्वास कर □ेती हैं और उसके जा□मे फँसकर मारी जाती हैं; □ैसे ही हम भो□ी-भा□ी गोपियाँ भी उस छ□िया कृष्णकी कपटभरी मीठी-मीठी बातोंमें आकर उन्हें सत्यके समान मान बैठीं और उनके नखस्पर्शसे होने□ा□ी कामव्याधिका बार-बार अनुभ□ करती रहीं ।

इस□ए श्रीकृष्णके दूत भौंरे ! अब इस □षयमें तू और कुछ मत कह । तुझे कहना ही हो तो कोई दूसरी बात कह ॥१९॥

प्रियसख पुनरागाः प्रेयसा प्रेषितः किं
□रय किमनुरुन्धे माननीयोऽसि मेऽङ्ग ।
नयसि कथमिहास्मान् दुस्त्यजद्वन्द्वपार्श्वं
सततमुरसि सौम्य श्री□धूः साकमास्ते ॥२०॥

हमारे प्रियतम प्यारे सखा ! जान पड़ता है तुम एक बार उधर जाकर फिर □ौट आये हो । अ□श्य ही हमारे प्रियतमने मनानेके □ये तुम्हें भेजा होगा । प्रिय भ्रमर ! तुम सब प्रकारसे हमारे माननीय हो । कहो, तुम्हारी क्या इच्छा है? हमसे जो चाहो सो माँग □ो । अच्छा, तुम बताओ, क्या हमें □हाँ □े च□ना चाहते हो ? अजी, उनके पास जाकर □ौटना बड़ा कठिन है । हम तो उनके पास जा चुकी हैं । परन्तु तुम हमें □हाँ □े जाकर करोगे क्या ? प्यारे भ्रमर ! उनके साथ-उनके □क्षः स्थ□पर तो उनकी प्यारी पत्नी □क्ष्मीजी सदा रहती हैं न ? तब □हाँ हमारा नि□ाह कैसे होगा ? ॥२०॥

अपि बत मधुपुर्यामार्यपुत्रोऽधुनाऽऽस्ते
स्मरति स पितृगेहान् सौम्य बन्धूंश्च गोपान् ।
क्वचिदपि स कथा नः किङ्करीणां गृणीते
भुजमगुरुसुगन्धं मूर्ध्न्यधास्यत् कदा नु ॥२१॥

अच्छा, हमारे प्रियतमके प्यारे दूत मधुकर ! हमें यह बत□ाओ कि आर्यपुत्र भग□ान् श्रीकृष्ण गुरुकु□से □ौटकर मधुपुरीमें अब सुखसे तो हैं न ? क्या □े कभी नन्दबाबा, यशोदारानी, यहाँके घर, सगे -सम्बन्धी और ग्वा□बा□ोंकी भी याद करते हैं ? और क्या हम दासियोंकी भी कोई बात कभी च□ाते हैं ? प्यारे भ्रमर! हमें यह भी बत□ाओ कि कभी □े अपनी अगरके समान दिव्य सुगंधसे युक्त भुजा हमारे सिरोंपर रखेंगे ? क्या हमारे जी□नमें कभी ऐसा शुभ अ□सर भी आयेगा ? ॥२१॥